विचार बिन्दु

डूबते को तारना ही अच्छे इंसान का कर्तव्य होता है। –अज्ञात

खतरनाक है बच्चों के लिए मोबाइल फोन

इस शताब्दी का सबसे उन्नत और प्रभावी संचार उपकरण मोबाइल फोन है। मोबाइल फोन हम सभी की जिंदगी का एक अभिन्न अंग बन चुके हैं। टेक्नोलॉजी के इस दौर में बच्चों का मोबाइल से खास लगाव हो चला है। आजकल बच्चे से बुजुर्ग के हाथों में मोबाइल देखा जा सकता है। आजकल ज्यादातर बच्चे मोबाइल फोन की बुरी आदत का शिकार हो गए हैं। बच्चों को मोबाइल फोन की ऐसी लत लगी है कि वो सोते-जागते, खाते-पीते, सिर्फ फोन में लगे रहते हैं। मोबाइल के बेहताशा उपयोग का बच्चों पर दुष्प्रभाव की जानकारी हर किसी को होनी जरुरी है ताकि यह पत्ता चल सके की यह बच्चों के लिए लाभकारी है या हानिकारक।

मोबाइल बच्चों का दोस्त है या दुश्मन। बिना विलंब किए अभिभावकों को इस पर गहनता से मंथन की जरुरत है। हाल ही में प्रयागराज में मोबाइल को लेकर ऐसी घटना सामने आई जो किसी भी पेरेंट को सोचने पर मजबूर कर देगी। 9वीं कक्षा की छात्रा को जब मोबाइल पर गेम खेलते देखा तो पिता ने डांट दिया। ऐसे में बेटी ने रात होते ही अपने कमरे में जाकर फांसी लगा ली। यह ऐसा कोई पहला मामला नहीं है। देश के हर कोने से ऐसे मामले अक्सर सुर्खियों में आते रहते हैं। आजकल मोबाइल का ज्यादा इस्तेमाल बच्चों को इंटरनेट एडिक्शन की तरफ ले जा रहा है। इस तरह के एडिक्शन से मानसिक बीमारियां पैदा होती हैं और ऐसे में बच्चे कोई न कोई गलत कदम उठा लेते हैं। आजकल के बच्चे इंटरनेट लवर हो गए हैं। इनका बचपन रचनात्मक कार्यों की जगह डेटा के जंगल में गुम हो रहा है। पिछले कई सालों में सूचना तकनीक ने जिस तरह से तरक्की की है, इसने मानव जीवन पर गहरा प्रभाव डाला है बल्कि एक तरह से इसने जीवनशैली को ही बदल डाला है। बच्चे और युवा एक पल भी स्मार्टफोन से खुद को अलग रखना गंवारा नहीं समझते। इनमें हर समय एक तरह का नशा सा सवार रहता है। वैज्ञानिक भाषा में इसे इंटरनेट एडिक्शन डिस्ऑर्डर कहा गया है।

अपने बच्चों को मोबाइल और कंप्यूटर पर गेम खेलते अनेक माता-पिता बहुत खुश होते हैं। वे दूसरों को बड़े गर्व के साथ यह बताते तनिक भी नहीं हिचकते की उनका बेटा डिजिटल दुनियां के नए जमाने के साथ दौड़ रहा है। वे बड़े खुशी से बताते हैं कि वह मोबाइल पर फोटो निकाल लेता है। मैसेज भेज देता है। व्हाट्सप पर बात कर लेता है और फोटो, वीडियो शेयर कर लेता है। यहाँ तक की गूगल पर कुछ भी खोज लेता है। लेकिन शायद वह इस बात से अनजान है कि जिसे वह बच्चे की स्मार्टनेस समझ रहे हैं वह उसके विकास में बाधा भी बन सकता है। विशेषज्ञ मानते है कि इलेक्ट्रॉनिक गजेट और कंप्यूटर का अत्यधिक प्रयोग बच्चों के लिए अच्छा नहीं है। इससे उनमें संवादहीनता और चिड़चिड़ेपन की प्रवृत्ति बढ़ती है।

देश में इंटरनेट के तेजी से बढ़ते इस्तेमाल में बचपन खोता जा रहा है जिसकी परवाह न सरकार को है और न ही समाज इससे चिंतित है। ऐसा लगता है जैसे गैर जरुरी मुद्दे हम पर हावी होते जारहे है और वास्तविक समस्याओं से हम अपना मुंह मोड़ रहे है। यदि यह यूँ ही चलता रहा तो हम बचपन को बर्बादी की कगार पर पहुंचा देंगे। देश के साथ यह एक बड़ी नाइंसाफी होगी जिसकी कल्पना भी हमें नहीं है।

मौजूदा दौर में बच्चों में खेलकूद का स्थान इंटरनेट ने ले लिया है। इसका सीधा प्रभाव बच्चों के शारीरिक और मानसिक विकास पर पड़ा है। शहरों के साथ अब गांवों में भी मोबाइल की पहुँच होने से बच्चों में इंटरनेट की लत बढ़ गई है। इससे उनमें संवादहीनता का खतरा बढ़ रहा है। बच्चे के ऐसे व्यवहार को अनदेखा करने की जगह इस पर सजग और सावधान होने की जरूरत है। मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि इससे बच्चों का स्वाभाविक विकास बुरा प्रभाव पड़ता है।

एक अभिभावक का कहना है उसका बेटा स्कूल से आते ही कंप्यूटर पर बैठ जाता है, कई आवाज लगाने पर भी हिलता तक नहीं। बाहर घूमने की जगह उनका बेटा कंप्यूटर पर व्यस्त रहता है, लेकिन अब उसके व्यवहार पर चिंता होने लगी है। वह किसी से बात करना तक पसंद नहीं करता, ज्यादा कुछ बोलों तो चिढ़ जाता है या चिल्लाकर जवाब देता है। एक दूसरा अभिभावक अपनी बेटी के व्यवहार से चिंतित है। वह कहती हैं कि अभी आठवीं कक्षा में ही है, लेकिन उसके अंदर इस उम्र के बच्चों सी चपलता और चंचलता नहीं है। काफी कम बोलती है। इंटरनेट सर्फिग में उसका खाली समय बीतता है।

चिकित्स्कीय आंकड़ों के मुताबिक 12 से 18 महीने की उम्र के बच्चों में स्मार्टफोन के इस्तेमाल की बढ़ोतरी देखी गई है। ये स्क्रीन को आंखों के करीब ले जाते हैं और जिससे आंखों को नुकसान पहुंचता है। आंखें सीधे प्रभावित होने से बच्चों को जल्दी चश्मा लगने, आंखों में जलन और सूखापन, थकान जैसी दिक्कते हो रही हैं। स्मार्टफोन चलाने के दौरान पलकें कम झपकाते हैं। इसे कंप्यूटर विजन सिंड्रोम कहते हैं। माता-पिता ध्यान दें कि स्क्रीन का सामना आधा घंटे से अधिक न हो। कम उम्र में स्मार्टफोन की लत की वजह बच्चे सामाजिक तौर पर विकसित नहीं हो पाते हैं। बाहर खेलने न जाने की वजह से उनके व्यक्तित्व का विकास नहीं हो पाता। मनोविशेषज्ञों के पास ऐसे केस भी आते हैं कि बच्चे पसंदीदा कार्टून कैरेक्टर की तरह ही हरकतें करने लगते हैं। इस कारण उनके दिमागी विकास में बाधा पहुंचती है। बच्चे अक्सर फोन में गेम खेलते या कार्टून देखते हुए खाना खाते हैं। इसलिए वे जरूरत से अधिक या कम भोजन करते हैं। अधिक समय तक ऐसा करने से उनमें मोटापे की आशंका बढ़ जाती है।

देश में इंटरनेट के तेजी से बढ़ते इस्तेमाल में बचपन खोता जा रहा है जिसकी परवाह न सरकार को है और न ही समाज इससे चिंतित है। ऐसा लगता है जैसे गैर जरुरी मुद्दे हम पर हावी होते जा रहे है और वास्तविक समस्याओं से हम अपना मुंह मोड़ रहे है। यदि यह यूँ ही चलता रहा तो हम बचपन को बर्बादी की कगार पर पहुंचा देंगे। देश के साथ यह एक बड़ी नाइंसाफी होगी जिसकी कल्पना भी हमें नहीं है। जब से इंटरनेट हमारे जीवन में आया है तबसे बच्चे से बुजुर्ग तक आभासी दुनियां में खो गए है। हम यहाँ बचपन की बात करना चाहते है। देखा जाता है पांच साल का बच्चा भी आँख खोलते ही मोबाइल पर लपकता है। पहले बड़े इसे अपने काम के लिए करते थे। अब बच्चे भी इंटरनेट के शौकीन होते जा रहे हैं। बाजार ने उनके लिए भी इंटरनेट पर इतना कुछ दे दिया है कि वह पढ़ने के अलावा बहुत कुछ इंटरनेट पर करते रहे हैं। पेरेंट्स को बच्चों की ऐसी गतिविधियों पर नजर रखनी चाहिए और समय रहते उनकी ऐसी आदत को पॉजेटिव तरीके से दूर करना चाहिए।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

राशिफल शनिवार 24 सितम्बर, 2022

पंडित अनिल शर्मा

आश्विनी मास, कृष्ण पक्ष, चतुरदशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2079, पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र परिवार प्रातः 5:07 तक, साध्य योग प्रातः 9:42 तक, विष्टि करण दिन 2:52 तक, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कन्या, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-वृष, बुध-कन्या, गुरू-मीन, शुक्र-सिंह, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

भद्रा दिन 2:52 तक रहेगी। आज शुक्र कन्या राशि में रात्रि 9:03 पर प्रवेश करेगा। आज मास शिवरात्रि, चौदस का श्राद्ध और विषशस्त्रादि से मृतको का श्राद्घ है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:49 से 9:19 तक, चर 12:14 से 1:49 तक, लाभ-अमृत 1:49 से 4:48 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:20, सूर्यास्त 6:18

मेष

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। आज व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी।

धनु

परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा का कार्यक्रम बन सकता है। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा।

वृष

परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आज नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

कन्या

आर्थिक/वित्तीय मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

मकर

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आज बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मिथुन

नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा। महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

तुला

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित यात्रा संभव है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को बाहर जाना पड़ सकता है। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ

परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक मामलों में दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

वृश्चिक

व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मीन

अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। व्यावसायिक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

समाजवाद के प्रणेता अहिंसावादी अग्रवंशी सम्राट महाराजा अग्रसेन

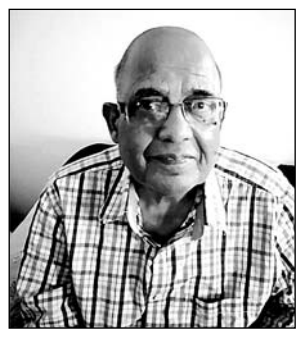

डा. जे. के. गर्ग

निर्विवाद रूप से किसी भी राष्ट्र या समाज एवं परिवार को उन्नत विकसित और कल्याणकारी बनाने के लिये उसके आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक स्तम्भों का मजबूत होना अति आवश्यक है। लगभग 5141 वर्ष पूर्व महाराजा अग्रसेनजी इन्हीं चार स्तंभों को मजबूत कर समद्धर्शाली, कल्याणकारी समाजवादी एवं शक्तिशाली राज्य का निर्माण करने में सफल हुए थे। अग्रसेन एक पौराणिक कर्मयोगी लोकनायक होने के साथ -साथ अहिंसा और समाजवाद के प्रणेता दानवीर युग पुरुष थे जिनका जन्म अश्विनशुक्ल प्रतिपदा के दिन प्रताप नगर के सूर्यवंशी राजा वल्लभसेन के यहाँ हुआ था उनकी माताजी का नाम भगवती देवी था। प्रतापनगर राजस्थान एवं हरियाणा राज्य के बीच सरस्वती नदी के किनारे स्थित हुआ करता था ।

ऐसा भी कहा जाता है की महाराजा अग्रसेन भगवान श्रीराम के पुत्र कुश की 34व्वी पीढ़ी के थे। इस मान्यता के मुताबिक अग्रवंशी भगवान राम के वंशज होते है। कहा जाता है कि महाभारत के दसवें दिन राजा वल्लभसेन वीर गति को प्राप्त हो गये थे। पन्द्रह वर्ष की अल्प आयु मे ही अग्रसेनजी ने महाभारत के धर्मयुद्ध में पांडवो की तरफ से भाग लिया था। भगवान श्रीकृष्ण भी उनकी बुद्धिमता, शोर्य, पराक्रम, समझबूझ से अत्यंत प्रभावित हुए थे और उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि युवा अग्रसेन भविष्य में एक पराक्रमी सम्राट एवं युग पुरुष होंगे ।

विवाह-युवा अग्रसेन ने सर्पों के राजा नागराज की बेटी राजकुमारी माधवी के स्वयंवर में अनेकों राजाओं, राजकुमारों और स्वर्ग के सम्राट इंद्रदेव के साथ भाग लिया था। स्वयंवर में राजकुमारी माधवी ने राजकुमार अग्रसेन का चयन कर उनका वरण किया। अग्रसेन माधवी के विवाह से दो विभिन्न संस्कृतियों एवं परिवारों का मिलन हुआ क्योंकि राजकुमार अग्रसेन जहाँ एक सूर्यवंशी थे वहीं राजकुमारी माधवी एक नागवंशी थी।

भगवान शिव और माता लक्ष्मी की आराधना

महाभारत के युद्ध के कारण जन धन की बहुत तबाही हुई थी इसलिए अपने राज्य की खुशहाली के वास्ते महाराजा अग्रसेन ने काशी जाकर भगवान शिव की कठोर तपस्या की जिससे खुश हो कर भगवान शिवजी ने उन्हें दर्शन दिया और उनको आदेश दिया कि वे महालक्ष्मी जी की पूजा और ध्यान करें। अग्रसेन ने महालक्ष्मी की पूजा आराधना शुरू कर दी। माँ लक्ष्मी ने उनकी परोपकार हेतु की गई तपस्या से खुश होकर उन्हें दर्शन दिए और आदेश दिया कि वे अपना एक नया राज्य बनायें और क्षत्रीय परम्परा के स्थान पर वैश्य परम्परा अपना लें। माता लक्ष्मी ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि उनके और उनके अनुयायियों को कभी भी किसी चीज की कमी नहीं होगी । लक्ष्मी माता का आदेश मान कर अग्रसेन महाराज ने क्षत्रीय कुल को त्याग वैश्य धर्म को अपना लिया, इस प्रकार महाराजा अग्रसेन प्रथम वैश्य सम्राट बने ।

अग्रोहा शहर का जन्म

देवी महालक्ष्मी से आशीर्वाद प्राप्त करने के बाद राजा अग्रसेन ने नए राज्य की स्थापना एवं उस राज्य की राजधानी के चयन हेतु रानी माधवी के साथ भारत का भ्रमण किया, अपनी यात्रा के दौरान वे एक जगह रुके जहाँ उन्होंने देखा कि कुछ शेर और भेड़िये के बच्चे साथ खेल रहे थे। राजा अग्रसेन ने रानी माधवी से कहा के ये बहुत ही शुभ दैवीय संकेत है जो हमें इस पुण्य भूमि पर हमारे राज्य की राजधानी को स्थापित करने का इशारा कर रहा है। ऋषि मुनियों और ज्योतिषियों की सलाह पर नये राज्य का नाम अग्रेयगण रखा गया, जिसे कालान्तर में यह स्थान अग्रोहा नाम से जाना गया। अग्रोहा हरियाणा में हिसार के पास है। आज भी यह स्थान अग्रवाल समाज के लिए तीर्थ स्थान के समान है। यहां भगवान अग्रसेन, माता माधवी और कुलदेवी माँ लक्ष्मी जी के भव्य और दर्शनीय मंदिर है ।

समाजवाद के प्रेरणता

महाराजा अग्रसेन जी के राज्य में यह परंपरा थी कि जो भी व्यक्ति या परिवार उनके राज्य में आकर बसता था, अग्रोहा के सभी निवासी नवागंतुक नागरिक को सम्मान और स्वागत के रूप में एक रुपया और एक ईंट भेंट करते थे। कहा जाता है कि उस समय अग्रोहा में लगभग एक लाख से अधिक परिवार बसते थे। इस प्रकार उनके राज्य में आने वाला हर नागरिक एक लाख रुपये तथा एक लाख ईंटों का स्वामी बन जाता था। इन रुपयों से वह अपना व्यवसाय प्रारम्भ कर लेता था वहीं ईंटों से अपना खुद का मकान बना लेता था। यही परंपरा समाजवाद की ही मिसाल है ।

शासन व्यवस्था

अग्रसेन जी ने वैदिक सनातन आर्य संस्कृति की मूल मान्यताओं को लागू कर राज्य के पुनर्गठन में कृषि व्यापार उद्योग, गौ पालन के विकास के साथ-साथ नैतिक मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा का बीड़ा उठाया। महाराजा अग्रसेन जी पहले शासक थे जिन्होंने सहकारिता के आदर्श को सामाजिक जीवन में प्रतिस्थापित किया। उन्होंने जीवन के सुख सुविधाओं एवं भोग विलास आदि पर धन के अपव्यय के स्थान पर जीवन में सादगी, सरलता और मितव्ययिता बरतने पर जोर दिया। अग्रसेन के मतानुसार व्यक्ति को अपनी उपार्जित आय को चार भागों में बांट कर एक भाग का उपयोग परिवार के संचालन हेतु, दूसरे भाग का उपयोग उद्योग व्यवसाय या जीविका चलाने हेतु, तीसरे भाग का उपयोग सार्वजनिक कार्यों तथा चौथे भाग का उपयोग बचत कर राष्ट्र की समृद्धि में करना चाहिये।

अग्रवाल के 18 गोत्र एवं उनका नामकरण हममें से अधिकाश लोगों की मान्यता है कि अग्रवालों के 18 या साढ़े सत्तरह गोत्रो के नाम उनके 18 पुत्रों के नाम से रखे गये हैं किन्तु वास्तविकता में गोत्रों के नाम 18 यज्ञ करवाने वाले ऋषियों के नाम से हैं। महर्षि गर्ग ने भगवान अग्रसेन को 18 पुत्र के साथ 18 यज्ञ करने का संकल्प करवाया। माना जाता है कि इन 18 यज्ञों को ऋषि मुनियों ने सम्पन्न करवाया और इन्हीं ऋषि-मुनियों के नाम पर ही अग्रवंश के गोत्रों का नामकरण हुआ। प्रथम यज्ञ के पुरोहित स्वयं गर्ग ऋषि बने, उन्होंने राजकुमार विभु को दीक्षित कर उन्हें गर्ग गोत्र से मंत्रित किया। इस प्रकार अग्रवालों के 18 गोत्र हैं यथा– गर्ग, तायल, कुच्चल, गोयन, भंदेल, मंगल, मित्तल, बंसल, बिंदल, कंसल, नागल, सिंघल, गोयल, तिंगल, जिन्दल, धारण,

मधुकुल, एरेन। ऋषियों द्वारा प्रदत्त अठारह गोत्रों को भगवान अग्रसेन के 18 पुत्रों के साथ भगवान द्वारा बसायी 18 बस्तियों के निवासियों ने भी धारण कर लिया एक बस्ती के साथ प्रेम भाव बनाये रखने के लिए एक सर्वसम्मत निर्णय हुआ कि अपने पुत्र और पुत्री का विवाह अपनी बस्ती में नहीं दूसरी बस्ती में करेंगे। आगे चलकर यह व्यवस्था गोत्रों में बदल गई जो आज भी प्रचलित है। राज्य के उन्हीं 18 गणों से एक-एक प्रतिनिधि लेकर उन्होंने लोकतांत्रिक राज्य की स्थापना की, जिसका स्वरूप आज भी हमें भारतीय लोकतंत्र के रूप में दिखाई पड़ता है। महाराजा अग्रसेन ने परिश्रम से खेती, व्यापार एवं उद्योगों से धनोपार्जन के साथ-साथ उसका समान वितरण और आय से कम खर्च करने पर बल दिया। जहां एक ओर अग्रसेन जी ने वैश्य जाति को न्याय पूर्ण व्यवसाय का प्रतीक तराजू प्रदान किया वहीं दूसरी ओर उन्होंने अपनी प्रजा को आत्मरक्षा के लिए शास्त्रों के उपयोग की शिक्षा भी प्रदान करवाई थी। कुलदेवी महालक्ष्मी से परामर्श पर वे आग्रेय गणराज्य का शासन अपने ज्येष्ठ पुत्र विभु के हाथों में सौंपकर तपस्या करने चले गए। वर्तमान में अग्रवंशियो की संख्या लगभग आठ करोड़ है। अग्रसेन जी के वंशज आज भी उन्हीं की विचारधारा से प्रभावित होकर जनकल्याण के हितार्थ धर्मशाला, मंदिर, अनाथालय अस्पताल पुस्तकालय, स्कूल एवं कॉलेज की स्थापना करने में अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं ।

सच्चाई तो यही है कि सम्राट अग्रसेनजी ने अपने आपको एक महान एवं सफल मेनेजमेंट गुरु के रूप में स्थापित किय। महाराजा अग्रसेन ओर माता माधवी ने अपने सभी 18 पुत्रों को श्रेष्ठतम संस्कार प्रदान किये थे। महाराजा अग्रसेन को समाजवाद का प्रवर्तक, अहिसां के पुजारी, सुयोग्य प्रशासक एवं आदर्श मेनेजमेंट गुरु के रूप में जाना जाता है आठ करोड़ से ज्यादा अग्रवालों के लिये उनके सिद्धांत हमेशा अनुकरणीय और प्रेरक बने रहेगें। अग्रसेनजी के 5141 वें जन्मदिवस पर कोटि कोटि प्रणाम ।

डा. जे. के. गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा जयपुर

चुरू के राजगढ़ क्षेत्र में बरसात का दौर जारी

सादुलपुर, (निसं)। राजगढ़ उपखण्ड क्षेत्र में लंबे समय से चल रही मानसून की बेरुखी एवं बारिश के अभाव में दम तोड़ चुकी फसलों के लिए लगातार 3 दिन से सक्रिय मानसून नुकसान दायक ही साबित होता नजर आ रहा है। जानकारी के अनुसार कटाई की गई फसलें खेतों में ही पडी हैं, जिससे खेतों में पडी फसले बर्बाद होने का अदेंशा है। हाल ही में मूंग मोठ एवं चवला की लावणी चल रही थी जिसमें शत प्रतिशत फसल खराब होने का अंदेशा है ।

आगामी रबी फसल की बुआई हेतु किसानों ने बारिश को बहुत उपयुक्त बताया। राजगढ उपखण्ड क्षेत्र में अधिकांश किसान चने की फसले बोते हैं, जिनके लिए अब बरसात होना राहत भरी खबर भी है। वहीं चूरू जिले के राजगढ उपखंड शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में बादल झूम-झूम कर बरस रहे है। इसी बीच गुरुवार को पूरे दिन कहीं रिमझिम एवं कहीं हल्की फुहारों के रूप में वर्षा का दौर जारी रहा तथा शुक्रवार को अलसुबह 5.30 बजे तेज वर्षा का

■ मूंग मोठ एवं चवला की शत प्रतिशत फसल खराब होने का अंदेशा

दौर जारी हुआ जो 1 घंटे तक जारी रहा। इस दौरान कभी रिमझिम कभी तेज वर्षा होती रही।

मगर दुबारा से 8 बजे फिर वर्षा का दौर शुरू हुआ जो 9 बजे तक जारी रहा तीसरी बार पूर्वाहन 12.45 बजे वर्षा का दौर शुरू हुआ, जिससे करीबन दो घंटो तक अच्छी वर्षा हुई तथा वर्षा होने से किसानों के चेहरे खिल उठे एवं कहीं मायूसी देखने को भी मिली। इस दौरान हरियाणा निकटवर्ती बालाण,कामाण, जीराम बास, भाकरां, खैरु बडी, खैरू छोटी व बीराण आदि गाँवो में कहीं हल्की एवं कहीं मध्यम, कही अच्छी बारिश के समाचार हैं। समाचार लिखे जाने तक बारिश का दौर जारी रहा।

राजगढ़ क्षेत्र में लगातार तीन दिन से हो रही बारिश के चलते खेतों में पड़ी फसल खराब होने लगी है।

राजस्थान की शान थे फिल्म अभिनेता महिपाल

1963 में प्रदर्शित हिन्द फिल्म पारसमणी अपने समय बहुत कामयाब हुई थी। इसमें एक गाना था, "वो जब याद आए तो बहुत याद आए...।"

यह गाना आज भी बहुत लोकप्रिय है। इस फिल्म में नायक की भूमिका उस जमाने के सुपरस्टार महिपाल ने निभाई थी। पर्दे पर महिपाल पर यह

गाना फिल्माया गया था।

मगर बहुत कम लोग जानते होंगे कि अभिनेता महिपाल जोधपुर के थे। वे जैन समाज के भण्डारी गौत्र से थे। उनका पूरा नाम महिपाल भण्डारी था। उनका जन्म 24 नवंबर 1919 में जोधपुर में हुआ था। बचपन से ही उन्हें अभिनय का शोक था। जोधपुर में उन दिनों जहां कहीं भी रामलीला का मंचन होता तो अपने दादा जी को साथ लेकर जरूर पहुंच जाते। स्कूली शिक्षा के बाद उन्होंने जसवंत गवर्नमेंट कॉलेज जोधपुर से साहित्य में स्नातक किया। उन्हें लोक नाट्य देखने और कविताएं लिखने का भी शोक था। इसी को चलते वे गीतकार बनने एक बार बम्बई भी गए। उन्होंने 1940 के दशक की शुरुआत में मुंबई जाने से पहले थिएटर में काम भी किया।

पांचवें दशक की शुरुआत होते होते फिल्म जगत में प्रादेशिक भाषाओं में फिल्में बननी शुरू हो गई थी। जी बी कपूर ने भी सोचा कि सभी प्रादेशिक भाषाओं में फिल्में बन रही है और चल भी रही है,तो क्यों ना राजस्थानी फिल्म बनाई जाए। उन दिनों तक महिपाल जोधपुर में ही थे। एक दिन जी बी कपूर आनन्द बिहारी देलवा और सोहराब मोदी के सहायक को साथ लेकर कलाकारों का चयन करने जोधपुर पहुंच गए। उन लोगों ने नायक के लिए महिपाल का चयन कर लिया। सवा सौ

अभिनेता महिपाल

रुपए महीना की तनख्वाह देने की बात तय हो गई।

इस प्रकार 1942 में फिल्म नजराना से महिपाल के फिल्मी करियर की शुरुआत हुई। यह फिल्म राजस्थानी

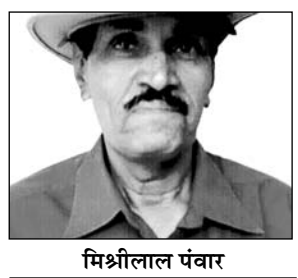

मिश्रीलाल पंवार

और हिंदी में बनाई गई। मगर दुर्भाग्य से यह फिल्म चल नहीं पाई। मगर फिल्मी नगरी में महिपाल की पहचान बन गई। इसके बाद उनकी मुलाकात वी. शांताराम से हुई तो वी. शांताराम ने गीत लिखने का प्रपोजल रख दिया। महिपाल ने बात मान ली।

इसके बाद उन्होंने वी. शांताराम की चार फिल्मों के लिए लिए गीत लिखे। वीं शांताराम के साथ उनके काम ने उन्हें स्थायी पहचान दिलाई। उन्होंने सोहराब मोदी और बाद में वाडिया ब्रदर्स, होमी वाडिया और जेबीएच वाडिया जैसे निर्देशकों के साथ काम किया। उन्होंने निरूपा रॉय, माला सिन्हा और यहां तक कि मीना कुमारी जैसी अभिनेत्रियों के साथ कई पौराणिक और ऐतिहासिक फिल्मों में काम किया। अनिता गुहा के साथ उनकी जोड़ी काफी लोकप्रिय रही थी। उन्होंने अलीबाबा और 40 चोर (1954), जेनी (1953), अलादीन और जादूई चिराग (1952) और अलीबाबा का बेटा (1955) सहित अरेबियन नाइट्स पर आधारित फंतासी फिल्मों की एक श्रृंखला भी की थी। वह पौराणिक एवं ऐतिहासिक फिल्मों का दौर था। हांलांकि उस समय पारम्परिक फिल्में भी बन रही थी। अशोक कुमार, देवानंद, दिलीप कुमार, राजेंद्र कुमार, धर्मेंद्र, राजकुमार जैसे कलाकार पारम्परिक फिल्मों में नायक की भूमिका निभा रहे थे। वहीं महिपाल स्टंट फिल्मों के स्टार थे। जिसमें पारसमानी, ज़बक, कोबरा गर्ल, जंतर मंतर, अरेबियन नाइट्स थीम वाली फिल्मों सहित अलीबाबा का नाम लिया जा सकता है। पौराणिक फिल्मे संपूर्ण रामायण, गणेश महिमा, वीर भीमसेन, जय संतोषी मां ने उन्हें लोकप्रिय बना दिया। उन्हें भगवान विष्णु, भगवान राम और उनके दो भगवान कृष्ण की प्रतिष्ठित भूमिका निभाने के लिए जाना जाता है। तुलसीदास और अभिमन्यु की भूमिका निभाने के अलावा, विभिन्न पुराणों, महाभारत, भागवत पुराण पर आधारित कई फिल्मों में वे दिखाई दिए। वी शांताराम के नवरंग (1959) में मुख्य भूमिका के रूप में भी जाना जाता है। उन्होंने वी. शांताराम की नवरंग (1959) और बाबूभाई मिस्त्री की पारसमणि (1963) सहित 1950 और 1960 के दशक की कई प्रसिद्ध फिल्मों में अभिनय किया और सुपर स्टार के रूप में अलग ही पहचान बनाई। उन्होंने करीब 130 फिल्मों में कार्य किया। राजस्थानी में बनी बाबा रामदेव फिल्म की सफलता ने महिपाल को अपार सफलता दिलाई। बाबा रामदेव के भक्त जब इस फिल्म को देखने सिनेमाघरों में जाते तो पर्दे के आगे शीश झुकाना नहीं भूलते। सम्पूर्ण रामायण तथा कण कण में भगवान में उनके अभिनय की खूब सराहना हुई। 1970 के दशक की हिट जय संतोषी मां (1975) जैसी फिल्मों में दिखाई दिए। उन्होंने 40 वर्षों तक कार्य करने के बाद फिल्मों से संन्यास ले लिया।

उनकी एक विशेषता थी, इतने बड़े कलाकार होने के बाद भी अभिमान उन्हें छू भी नहीं पाया। घर-परिवार में जब भी मांगलिक कार्य होते, वे जोधपुर दौड़े चले आते। आखिर 86 वर्ष की आयु में 15 मई 2005 को हृदय गति रुक जाने से उनका मुंबई में निधन हो गया।

मिश्रीलाल पंवार,